(13) Dr Jeet Sh (30)

(119)

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद महिला रचनाकारों द्वारा रचित उपन्यासों की भाषा का समाज भाषा वैज्ञानिक विवेचन

डॉ0 जीत सिंह
स.प्रो. हिन्दी
कु.मा.रा. महाविद्यालय,
बादलपुर(गौ.बु. नगर)

डॉ0 तिलक सिंह
970, नई शिवपुरी, हापुड़ (उ.प्र.)

हिन्दी भाषा में स्वाधीनता प्राप्ति के बाद महिला कथाकारों की सर्वाधिक संख्या परिलक्षित होती है। इन महिला कथाकारों ने अपने उपन्यासों की रचना द्वारा कथ्य, भाषा और शिल्प आदि स्तरों पर नवीनता के अभिनव प्रतिमान स्थापित किये हैं। प्रमुख महिला कथाकारों के बहुचर्चित उपन्यासों की भाषा का समाज भाषाविज्ञान के संदर्भ में विवेचन करने से पहले समाज भाषाविज्ञान के स्वरूप, आयामों और प्रकार्य का ज्ञान आवश्यक है। समाज और संस्कृति के संदर्भ में भाषा का वैज्ञानिक विवेचन समाज भाषाविज्ञान कहलाता है। समाज और संस्कृति के क्षेत्र में होने वाला परिवर्तन भाषा को प्रेरित-प्रभावित और परिवर्तित करता है। समाज भाषाविज्ञान और भाषा का समाजशास्त्र मूलतः एक ही है। समाज भाषाविज्ञान के निम्नलिखित आयाम माने गये हैं –

1) बहुभाषिकता और कोड चयन
2) भाषा विस्थापन
3) भाषा अनुरक्षण
4) भाषा मानवीकरण
5) भाषा नियोजन

6) भाषाद्वैत (डाइग्लोसिया)
7) भाषा विस्तारीकरण

हिन्दी में महिला रचना
आंचलिक आदि सभी प्रकार के
उपन्यासों में मानक हिन्दी के
उपबोली का भी प्रयोग हुआ है।
और चाक आदि आंचलिक उपन्या
बुन्देलखंडी का भी प्रयोग किया है
कोड चयन प्रभावी बन गये हैं। ए
कोड परिवर्तन का प्रयोग इन उप
संदर्भों को बना रहा है। अलक
मधु घवन द्वारा रचित 'साइवर
प्रभाव-प्रक्रिया में आधुनिक प्रौद्
कारपोरेट जगत का सच और
है। भाषा विस्थापन, भाषा नियोज
समाज भाषाविज्ञान के सभी आ
विद्यमान है। इन उपन्यासों की
आयामों को आधार बनाकर वि
प्रकृति और प्रकार्यगत प्रभाव को
'उत्सव' उपन्यास कोड परिवर्त
पात्र परस्पर संवादों में हिन्दी-
करते हैं। अनेक पात्र विषयभे
परस्पर संवादों में हिन्दी-अंग्रे
परिवर्तन द्वारा हिन्दी भाषा,
विश्वसंदर्भों और विश्वसम्पर्क

कशिश शर्मा का 'कु
और उसका वीर' उपन्यास को
है। कोडमिश्रण के कारण इ
शैलियाँ प्रभावी बन गई हैं –

1) संस्कृत प्रभावित हि

Scanned by CamScanner